© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 08 | October – December 2017

लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह) में पात्र कल्पना

डॉ. आशुतोष कौशिक, 742/33, शान्त नगर, काठ–मण्ड़ी, रोहतक।

ABSTRACT :लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह) में क्रमशः दस उपशीर्षक हैं। चेलाराम शास्त्री, लाला छज्जूमल, गोगी और किच्छी, पुरी साहब, मास्टर बदलूराम, तीन सौ छियासी का कर्ज, भुवा चँदरो, भाई मेहर चंद, बटाला वाले जीजाजी, घर गायब है। इन दस उपशीर्षकों में लेखक ने अपनी 40–45 वर्ष पूर्व की अनुभूतियों को पुनः रेखांकित किया है। उपर्युक्त रूप से लिखे जीवनों ने लेखक को किसी न किसी रूप में अवश्य ही प्रभावित किया है। वह प्रभाव इतना गहरा था कि लेखक जीवन पर्यन्त उसे अपनी याद में सँजोए रहा है। फलतः अवसर आने पर वह प्रभाव संस्मरण बनकर फूट पड़ा है और लेखक ने उसे कलमबद्ध किया है। इसका नामकरण लाला छज्जूमल (संस्मरण संग्रह) किया गया है। उपोद्घात में लेखक ने लिखा है – "ये संस्मरण मेरी अनुभूति की आवाज हैं, परन्तु इनमें से आठ का सम्बन्ध किसी न किसी माध्यम से लाला छज्जूमल से जुड़ जाता है। इसलिए इसका नामकरण सीधा–साधा अभिधेय रूप में 'लाला छज्जूमल' (संस्मरण–संग्रह) कर दिया गया है। इस विषय में अधिक सोच–विचार समीचीन नहीं है।

.....

नाम लेखक की रुचि पर और विषय वस्तु पर ही आधारित होता है।"[1] इसका आशय यह नहीं है कि यह लाला छज्जूमल की जीवनी है। हाँ, यह अवश्य है कि लेखक का तादात्म्य लाला छज्जूमल से सीधा–साधा है और यह व्यक्तित्व लेखक को कुछ ज्यादा ही प्रभावित करता है, दूसरा यह है कि लेखक अन्य पात्रों के सम्बन्ध में उसी समय आता है जब वह लालाजी के सम्पर्क में आता है।

यदि किसी एक संस्मरण में आए केन्द्रीय पात्र पर विचार करते हैं तो वह एक कहानी का केन्द्रीय पात्र महसूस होता है, पढ़ने पर कहानी जैसा ही आनन्द भी आता है, परन्तु ये पात्र कहानी नहीं हैं, वास्तविकता हैं। ये समाज के जीते–जागते चरित्र हैं। यह सत्य है कि इनमें से अधिकांश पात्र आज जीवित नहीं हैं। परन्तु एक दो पात्र जीवित हैं। यथा 'गोगी', 'पुरी साहब', 'मेहर चन्द की पत्नी' उनसे वार्तालाप करके अन्य पात्रों के बारे में जानने का प्रयास किया तो पता चला कि वास्तव में वे पात्र उदात्त रहे हैं। इस संदर्भ में उपोद्घात में लेखक ने लिखा है – "इसको कहानी–संग्रह मानना नितान्त भूल होगी। हाँ, यह सत्य है कि इसके कथ्य में कहानी का सा आभास होता है, परन्तु कहानी के समान कल्पना का साम्राज्य इसमें नहीं है। इन संस्मरणों के पात्र पूर्णतः काल्पनिक या अवास्तविक नहीं हैं। जिन घटनाओं और क्रिया–कलापों का सहारा पात्रों के व्यक्तित्व को निखारने या चरित्र का निर्माण करने के लिए किया गया है, वे भी पूर्णतः अवास्तविक नहीं हैं।"[2]

यह सत्य है कि ये पात्र अवास्तविक नहीं, काल्पनिक नहीं, लेकिन इनका चित्रण जैसे वे हैं, उनसे अधिक किया गया है या बढ़ा–चढ़ा कर किया गया है। इस आक्षेप को स्वयं लेखक ने स्वीकार किया है, लेकिन इस आक्षेप का उत्तर देते हुए स्वयं लेखक ने लिखा है – "कहीं–कहीं पाठक को पठनोपरान्त यह